

Padma Shri



SHRI VINAYAK VISHNU KHEDEKAR

Shri Vinayak Vishnu Khedekar is widely recognized for his life dedicated to the field of folk art and culture. He is recognized for his sincere efforts for survival, revival and dissemination of folk and tribal ethos of Goa. His major endeavor is to re-discover and re-install cultural manifestation offorcibly converted and proscribed fold of the society, by the Portuguese invaderfor four and half centuries in alien religion. His achievement for restoration and effectual innovationsof indigenous art and craft forms has created landmark on the cultural map of the world.

2. Born on 29th September, 1938, Shri Khedekar was deprived from any formal education, but completed 12 years traditional Sanskrit, Vedic course in Gurukula. During this period, he was attracted and deeply inspired by the tradition of songs, narration, performances. He observed all 'annual compulsory rituals' attentively. He presented the traditional 'Keertans', in various Goan towns and villages. He simultaneously developed a career in Journalism. This resulted in creating awareness for indigenous culture in the state.

3. Shri Khedekar's pioneering work in the field of folklore is notable. The term 'Lokakala' itself is a gift from him to the State of Goa by re-discovering the aboriginal art forms, and presenting them at local, national and international platforms. He revived the age old customs and faiths, identifying the roots of earlier rituals practiced by the converted Gawda tribe. The same was destroyed by the Portuguese in their 450 years of ruling in Goa, by imposing inquisition, mass conversion, devastation of temple culture, banning cultural observation and conversing in their own dialect.

4. Shri Khedekar's quality and quantum of research findings stands magnificent. In all, he has 17 books to his credit, namely 'Lokasarita' and 'Goa: Land, Life and Legacy' illustrate the clear and authentic picture of Goa's cultural treasure. He has presented his research papers, to Ford Foundation, American Institute of Indian Studies, SNA, WZCC, NSD and several other Institutions and Universities. He has also been invited to deliver lectures on Goan culture in prestigious Institutions, Colleges and Universities all over the nation. He conceptualized and documented 104 folk and tribal musical instruments, from Maharashtra, Rajasthan, Goa and Gujarat, for Sangeet Natak Akadami, alongwith Goan folk festivals namely, Shigmo and Dhalo. After rendering 25 years of service on various executive posts, he retired as Member secretary of State Kala Academy (1996).

5. Shri Khedekar is a recipient of awards like "State Cultural Award", "Kalidas Puraskar", "Rang Sanman Puraskar" and many more. Most of his books are rewarded in Goa and Maharashtra. His most important contribution in the manner of articles, research papers and essays have occupied a space in prestigious journals, periodicals etc. He has written more than 400 articles, on socio-cultural, agro-economical and religious-spiritual aspects in and outside Goa.



श्री विनायक विष्णू खेडेकर

श्री विनायक विष्णू खेडेकर अपना सम्पूर्ण जीवन लोक कला और संस्कृति के प्रति समर्पित करने के लिए प्रख्यात हैं। उन्हें गोवा के लोक और जनजातीय परम्पराओं की रक्षा, पुनरुद्धार और प्रचार-प्रसार के अपने गंभीर प्रयासों के लिए जाना जाता है। उनका प्रमुख प्रयास पुर्तगाली आक्रमणकारियों द्वारा साढ़े चार शताब्दियों तक जबरन विदेशी धर्म-परिवर्तित और वर्जित समाज की सांस्कृतिक अस्मिता की पुनःखोज करना और उसे फिर से स्थापित करना रहा है। देशी कला और शिल्प रूपों के पुनरुद्धार और प्रभावशाली नवाचारों के क्षेत्र में उनकी उपलब्धि ने दुनिया के सांस्कृतिक नक्शे पर एक पहचान कायम की है।

2. 29 सितंबर, 1938 को जन्मे श्री खेडेकर कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए, लेकिन उन्होंने गुरुकुल में बारह वर्ष तक पौराणिक संस्कृत और वैदिक पाठ्यक्रम पूरा किया। इस अवधि के दौरान वह गीतों, कथावाचन, संगीत, नृत्य, रंगमंच आदि में प्रदर्शन की मौखिक परंपरा की ओर आकर्षित हुए और अत्यधिक प्रेरित हुए। उन्होंने सभी वार्षिक अनिवार्य अनुष्ठानों का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने गोवा के अनेक कस्बों और गांवों में पारंपरिक 'कीर्तन' प्रस्तुत किया। इसके अलावा, उन्होंने पत्रकारिता में करियर भी बनाया। उनके इस प्रयास के परिणामस्वरूप राज्य में स्वदेशी संस्कृति के प्रति चेतना का संचार हुआ।

3. श्री खेडेकर ने लोकगीतों के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। 'लोककला' शब्द अपने आप में उनका गोवा राज्य को दिया गया एक उपहार है जिसमें उन्होंने जनजातीय कला के रूपों को फिर से खोजकर स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत किया। उन्होंने परिवर्तित गवड़ा जनजाति द्वारा आचरित पूर्व अनुष्ठान कार्यों की जड़ों की पहचान की और युगों पुराने रीति-रिवाजों और आस्थाओं को पुनर्जीवित किया। पुर्तगालियों ने गोवा पर अपने 450 वर्ष के शासन काल के दौरान हस्तक्षेप, सामूहिक धर्मांतरण, मंदिर संस्कृति के विध्वंस, सांस्कृतिक पर्वों के मनाने और यहां तक कि अपनी बोली में बातचीत पर प्रतिबंध के द्वारा राज्य को नष्ट कर दिया था।

4. श्री खेडेकर के शोध निष्कर्षों की गुणवत्ता और मात्रा शानदार है। कुल मिलाकर उन्होंने 17 पुस्तकें लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'लोकसरिता' और 'गोवा; लैंड, लाइफ और लगेसी' में गोवा के सांस्कृतिक सम्पदा की स्पष्ट और प्रामाणिक तस्वीर दर्शायी गई है। उन्होंने अपने शोध पत्र फोर्ड फाउंडेशन, अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज, एसएनए, डब्ल्यूजेडसीसी, एनएसडी, कई अन्य संस्थानों विश्वविद्यालयों आदि में प्रस्तुत किए हैं। उन्हें पूरे देश के प्रतिष्ठित संस्थानों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में गोवा की संस्कृति पर व्याख्यान देने के लिए भी आमंत्रित किया गया है। उन्होंने संगीत नाटक अकादमी के लिए पश्चिम क्षेत्र, महाराष्ट्र, राजस्थान, गोवा और गुजरात राज्यों के 104 लोक और जनजातीय संगीत वाद्ययंत्रों, गोवा लोक महोत्सव शिगमो और धालो की संकल्पना की और उनके दस्तावेज तैयार किए। विभिन्न कार्यकारी पदों पर 25 वर्ष की सेवा प्रदान करते हुए वर्ष 1996 में राज्य कला अकादमी के सदस्य सचिव के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

5. श्री खेडेकर को सबसे प्रतिष्ठित "राज्य सांस्कृतिक पुरस्कार", "कालिदास पुरस्कार", "रंग सम्मान पुरस्कार" आदि प्रदान किए गए हैं। उनकी अधिकांश पुस्तकें गोवा और महाराष्ट्र में पुरस्कृत हैं। आलेख, शोध पत्र, निबंध के रूप में उनकी उत्कृष्ट रचनाओं को प्रतिष्ठित जर्नल, पत्रिकाओं आदि में स्थान मिला है। गोवा में और उसके बाहर सामाजिक-सांस्कृतिक, कृषि-विज्ञान और धार्मिक-आध्यात्मिक पहलुओं पर उनके 400 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं।